Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 9 ~ Issue 6 (2021) pp: 56-58
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

क्रान्ति की अग्रदूत: वीरांगना ऊदा देवी

डॉ0 शोभा मिश्रा

Associate Professor, Department of History, Navyug Kanya Mahavidyalay, Lucknow
Email:shobha.misra28@gmail.com

प्रस्तावना

1857 का भारतीय विद्रोह जिसे अंग्रेज़ सैनिक विद्रोह और हम भारतीय अपना प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते है, ब्रिटिश शासन के विरूद्ध लड़ा गया सशस्त्र विद्रोह था जिसने मुख्यतः उत्तर भारत को अपने शिकंजे में लिया था। इसका प्रारम्भ छावनी क्षेत्र मे छोटी झड़पों और आगजनी से हुआ पर धीरे-धीरे इसने एक विकराल रूप धारण कर लिया। इसका अंत ईस्ट इंडिया कंपनी (East India Company) के शासन की समाप्ति के साथ हुआ और पूरे भारत पर ब्रिटिश ताज का प्रत्यक्ष शासन प्रारम्भ हो गया जो अगले 90 वर्षो तक चलता रहा।

ईस्ट इंडिया कंपनी (East India Company) के राबर्ट क्लाइव (Robert Clive) के नेतृत्व में 1757 में प्लासी का युद्ध जीत कर बंगाल में कर मुक्त व्यापार का अधिकार प्राप्त किया। 1764 की बक्सर विजय ने उन्हें सम्पूर्ण बंगाल पर अधिकार दिला दिया और फिर कम्पनी ने एक-एक करके सिन्ध, पंजाब, मराठा साम्राज्य, सतारा, नागपुर, झाँसी, सम्भलपुर और 1856 में अवध को भी अपने साम्राज्य में मिला लिया।

भारतीय समाज में, अर्थव्यवस्था में अंग्रेजों की नीतियों के कारण असंतोष लगातार बढ़ता जा रहा था ऐसे में जब सिपाहियों को नयी एनफील्ड (enfield) बन्दूकों में कारतूस भरने के लिये उन्हें दाँत से काटने को कहा गया और ये बात फैल गयी कि कारतूस को सीलन से बचाने के लिये जो बाहरी आवरण है वो गाय और सुअर की चर्बी से बना है तो आक्रोश चरम सीमा पर पहुँच गया और शुरू हुआ ब्रिटिश सरकार का सिलसिलेवार विद्रोह। पहले 24 जनवरी 1857 को कलकत्ता के निकट आगजनी हुई। 26 फरवरी को 19वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री (19th Bengal Native Infantry) ने नये कारतूसों के प्रयोग से इन्कार कर दिया। 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री (34th Bengal Native Infantry) के मंगल पाण्डे (Mangal Pandey) ने बैरकपुर छावनी में एक ब्रिटिश अफसर पर हमलाकर उसे घायल कर दिया। 08 अप्रैल 1857 को उसे फाँसी दे दी गयी।

ये चिंगारी जब मेरठ पहुँची तो छावनी में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। सबसे पहले शस्त्रागार पर क़ब्ज़ा किया और फिर गोरों पर निशाना साधा। इसके बाद वे दिल्ली कूच कर गये और अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र को अपना नेता घोषित कर दिया। हिन्दू-मुसलमान मिल कर विद्रोह को आगे-आगे, जिन्हें आम नागरिकों का भरपूर सहयोग मिला। जल्द ही विद्रोह की ज्वाला फैलने लगी और बरेली, कानपुर तथा लखनऊ भी इसकी जद में आ गये। यहाँ महिलाओं ने ना केवल जुलूस निकाले, धरने दिये बल्कि अंग्रेजों की गोलियाँ भी खाई। कुछ प्रमुख नाम है - ऊदा देवी, आशा देवी, महावीरी देवी, शोभा देवी, गुर्जरी देवी, रणवीरी वाल्मीकि, भगवानी देवी और नर्तकी हैदरी बाई। जिन्होंने अवध प्रान्त में अपने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया।

30 जून 1857 को लखनऊ के चिनहट के पास इस्माइलगंज इलाके में हेनरी लॉरेंस (Henry Lawrence) के नेतृत्व में ब्रिटिश सैनिकों और मौलवी अहमद उल्लाह शाह के नेतृत्व में भारतीय क्रान्तिकारियों के बीच एक भयानक जंग हुई जिसमें नवाब वाजिद अली शाह की सेना के एक वीर सैनिक मक्का पासी वीरगति को प्राप्त हुए। चिनहट इलाके का महावीर जी का मन्दिर इस युद्ध का गवाह बना। इस युद्ध में अंग्रेज पराजित हुए और भागकर रेजीडेन्सी में छुप गये। इस जंग में 200 अंग्रेज मारे गये थे और

05 तोपों को क्रान्तिकारियों ने अपने क़ब्ज़े में ले लिया था। क्रान्तिकारियों के हौसले बुलन्द थे और बेगम हज़रत महल का नेतृत्व उच्चकोटि का।

02 जुलाई 1857 को क्रान्तिकारियों ने रेज़ीडेन्सी पर आक्रमण किया और हेनरी लॉरेंस (Henry Lawrence) घायल हुए तथा 04 जुलाई को उनकी मृत्यु हो गयी। नवाब वाजिद अली शाह के 11 वर्षीय पुत्र बिरज़ीस कद्र को नवाब घोषित कर बेगम हज़रत महल ने शासन की कमान सम्भाल ली। इसके बाद तो कभी अंग्रेज़ तो कभी क्रान्तिकारी जीतते और हारते रहे।

नवम्बर 16, 17 और 18 को लखनऊ की गलियाँ भयंकर क़त्ले-आम की साक्षी बनी। आलमबाग, केसरबाग, शाहनज़फ़ रोड, दिलकुशां और सिकन्दर बाग लड़ाई और मुठभेड़ के प्रमुख केन्द्र बने। अंग्रेजी फौज़ लखनऊ में घुसने का प्रयास कर रही थी। अंग्रेज़ जब आलमबाग की तरफ़ से जब दाखिल नहीं हो सके तो दिलकुशा में जमा हुए। अंग्रेजी सैनिक चिनहट की पराजय से बौखलाये हुए थे और जब उन्हें ज्ञात हुआ कि सिकंदरबाग में लगभग 2000 क्रान्तिकारी मौजूद है तो उन्होंने दिलकुशा से सिकन्दराबाग की ओर कूच किया। यहाँ उनका सामना हुआ एक ऐसी वीरांगना से जिसके साहस को स्वयम् ब्रिटिश अधिकारियों ने सलाम किया।

ये वीरांगना भी, ऊदा देवी पासी जिन्होनें 1857 के संग्राम में भारतीय सैनिकों की तरफ़ से भाग लिया। ऊदा देवी अवध के छठे नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की सदस्य थी। इस विद्रोह के समय हुई लखनऊ की घेराबन्दी के समय लगभग 2000 भारतीय सिपाहियों के शरण-स्थल सिकन्दर बाग पर ब्रिटिश फौजों द्वारा चढ़ाई की गयी थी और 16 नवम्बर को बाग में शरण लेने वाले इन सिपाहियों का संहार किया गया था।

इस लड़ाई के दौरान ऊदा देवी ने पुरुषों के वस्त्र धारण कर अपने आपको एक पुरुष सिपाही के रुप में तैयार किया और बन्दूक तथा गोला बारुद लेकर पीपल के एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गई। अपने रण कौशल और सटीक निशाने से उन्होंने तब तक ब्रिटिश सैनिकों को बाग में प्रवेश नहीं करने दिया जब तक उनका गोला बारूद खत्म नहीं हो गया। उन्होंने 30 से अधिक अंग्रेज सिपाहियों को मार गिराया। जब वे पेड़ से उतर रही थी तो अंग्रेजों की गोली का शिकार हुई। जब अंग्रेजों ने बाग मे प्रवेश किया तो उनका पूरा शरीर गोलियों से छलनी कर दिया। निकट आने पर उन्होंने पाया कि वे एक महिला थी। वे भी ऊदा देवी की वीरता के कायल हो

-2-

गये। सार्जेंट फोर्ब्स मिशेल (Seargent Forbes Mischell) ने अपनी रचना में सिकन्दर बाग की इस वीरांगना का जिक्र किया। यहाँ तक कि लंदन टाईम्स (London Times) के सम्पादक विलियम हार्वर्ड रसेल (William Harvard Russell) ने भी पुरुष वेशभूषा में एक स्त्री द्वारा पीपल के पेड़ से फायरिंग करके ब्रिटिश सेना को नुकसान पहुँचाने का उल्लेख किया है। कहा जाता है कि स्तब्ध कर देने वाली इस वीरता से अभीभूत होकर ब्रिटिश कमान्डर कोलिन कैम्पबेल ने अपनी हैट उतार कर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी।

अवध प्रान्त एक समृद्ध विरासत के लिये जाना जाता है। यहाँ के लोग आमूमन शान्तप्रिय थे और अपने नवाब वाजिद अली शाह से संतुष्ट भी। वाजिद अली शाह यूँ तो कला प्रेमी थे पर समय की नज़ाकत को समझते हुए अपनी कई बेग़मों को उन्होंने सैन्य प्रशिक्षण दिलवाया था। अपनी सेना मे जब बड़ी मात्रा में भर्तियाँ की तो खातूनों की भी एक टुकड़ी बनाई और बेगम सिकंदर महल को इसका रिसालदार बनाया था। अपनी सेना की टुकड़ियों को नवाब साहब ने रिसाला, दाउदी, जाफनी जैसे फूलों के नाम दिये थे और उन्हीं रंगो को वर्दी भी। ऊदा देवी पति मक्का पासी की प्रेरणा से सेना में भर्ती हुई और पति की वीरगति के बाद बेगम हज़रत महल की प्रिय हो गयी। जिन्होंने ऊदा देवी को महिला दस्ते का कमान्डर बनाया।

ऊदा देवी के योगदान को हम कभी भुला नहीं सकते। बीसवीं सदी में जो राष्ट्रवादी आन्दोलन आया। उसकी जमीन तो 1857 की इस क्रान्ति ने ही तैयार की थी। इस क्रान्ति में अवध प्रान्त की ऊदा देवी का योगदान ये भी स्पष्ट करता है कि भारतीय महिलायें कभी किसी चुनौती के आगे नहीं झुकी और अपनी वीरता से उन्होंने सबसे सम्मान पाया।

साहित्यकार अमृमलाल नागर ने भी अपनी पुस्तक "गदर के फूल"मे ऊदा देवी के योगदान को सराहा है।

संदर्भः

1. Bats, Crispin: Carter Marine.
"Muting at the Margins: New perspective on the Indian uprising of 1857"
2. Charu Gupta – The gender of caste: Representing Dalits in print.
3. Badri Narayan – "Women heroes and Dalit assertion in North India: Culture identity and politics"
4. Charu Gupta – Dalit Veeranganas and re- invention of 1857.
5. R.D.Verma – वीरांगना ऊदा देवी
6. SafirRane – "The forgotten women of 1857"
7. अमृतलालनागर -"गदरकेफूल"